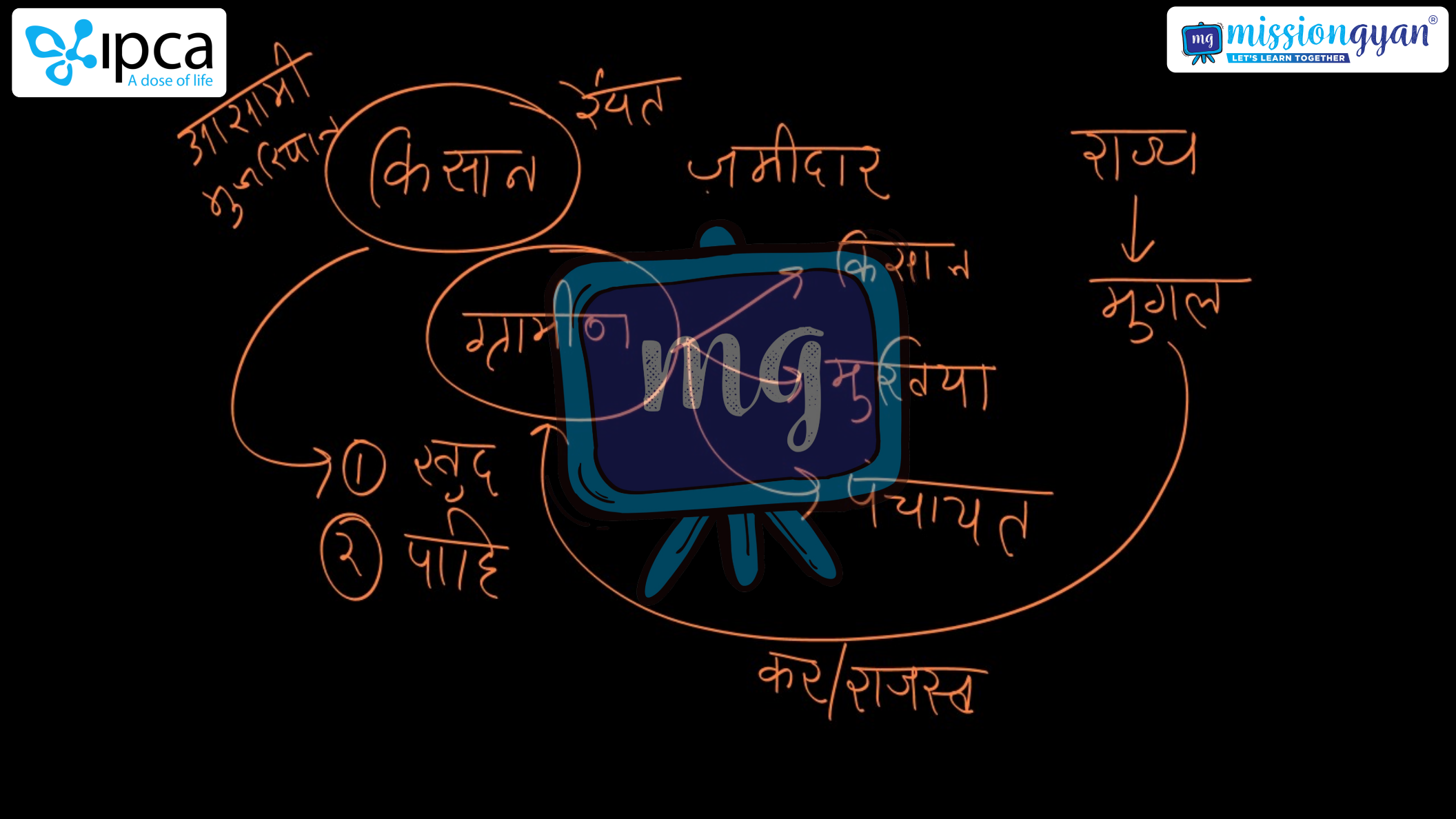

कक्षा - 12
भारतीय इतिहास के कुछ विषय
अध्याय - 8
किसान, ज़मींदार और राज्य
भाग - 2
प्रीतेश जोशी


आत्मनिर्भर
किसान
रैयत
जमीदार
राज्य
मुगल
ग्रामीण
किसान
मुखिया
पंचायत
① खुद
② पीढ़ि
कर/राजस्व

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



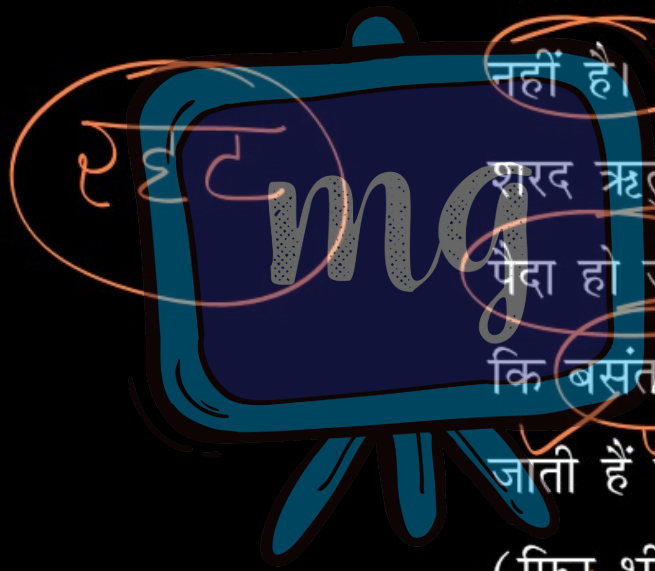
पेड़ों और खेतों की सिंचाई

यह बाबरनामा से लिया गया एक अंश है जो सिंचाई के उन उपकरणों के बारे में बताता है जो इस बादशाह ने उत्तर भारत में देखे:

हिंदुस्तान के मुल्क का ज़्यादातर हिस्सा मैदानी ज़मीन पर बसा हुआ है। हालांकि यहाँ शहर और खेती लायक ज़मीन की बहुतायत है, लेकिन कहीं भी बहते पानी (का इंतज़ाम) नहीं... वे इसलिए... कि फ़सल उगाने या

ipca
A dose of life

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



बागानों के लिए पानी की बिलकुल ज़रूरत नहीं है।

शरद ऋतु की फ़सलें बारिश के पानी से ही पैदा हो जाती हैं; और ये हैरानगी की बात है कि बसंत ऋतु की फ़सलें तो तब भी पैदा हो जाती हैं जब बारिश बिलकुल ही नहीं होती।

(फिर भी) छोटे पेड़ों तक बालटियों या रहट के ज़रिये पानी पहुँचाया जाता है...

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

लाहौर, दीपालपुर (दोनों ही आज के पाकिस्तान में) और ऐसी दूसरी जगहों पर लोग रहट के ज़रिये सिंचाई करते हैं।

वे रस्सी के दो गोलाकार फ़ंदे बनाते हैं जो कुएँ की गहराई के मुताबिक लंबे होते हैं। इन फ़ंदों में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर वे लकड़ी के गुटके लगाते हैं और इन गुटकों पर घड़े बाँध देते हैं। लकड़ी के गुटकों और घड़ों से बँधी इन रस्सियों को कुएँ के ऊपर पहियों से लटकाया जाता है।

पहिये की धुरी पर एक और पहिया। इस अंतिम पहिये को बैल के ज़रिये घुमाया जाता है. इस पहिये के दाँत पास के दूसरे पहिये के दाँतों को जकड़ लेते हैं और इस तरह घड़ों वाला पहिया घूमने लगता है। घड़ों से जहाँ पानी गिरता है, वहाँ एक संकरा नाला खोद दिया जाता है और इस तरीके से हर जगह पानी पहुँचाया जाता है।

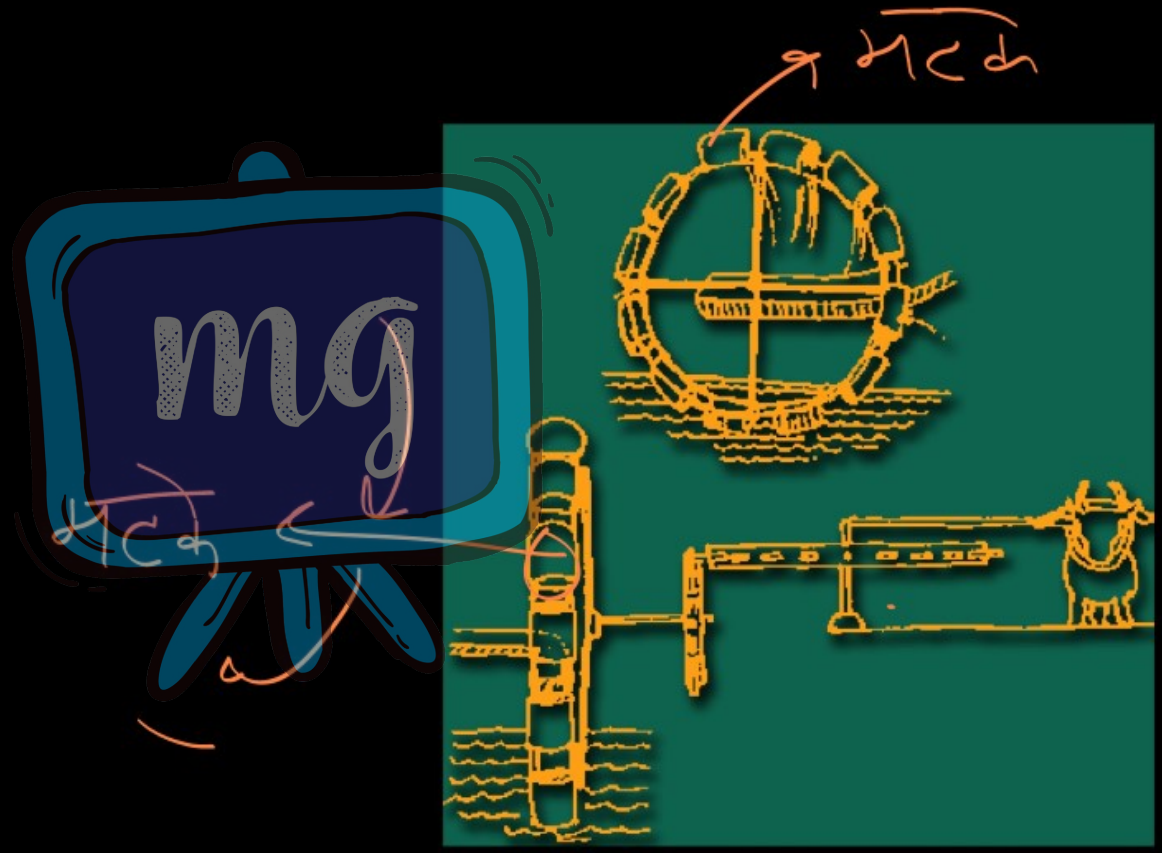
ipca
A dose of life

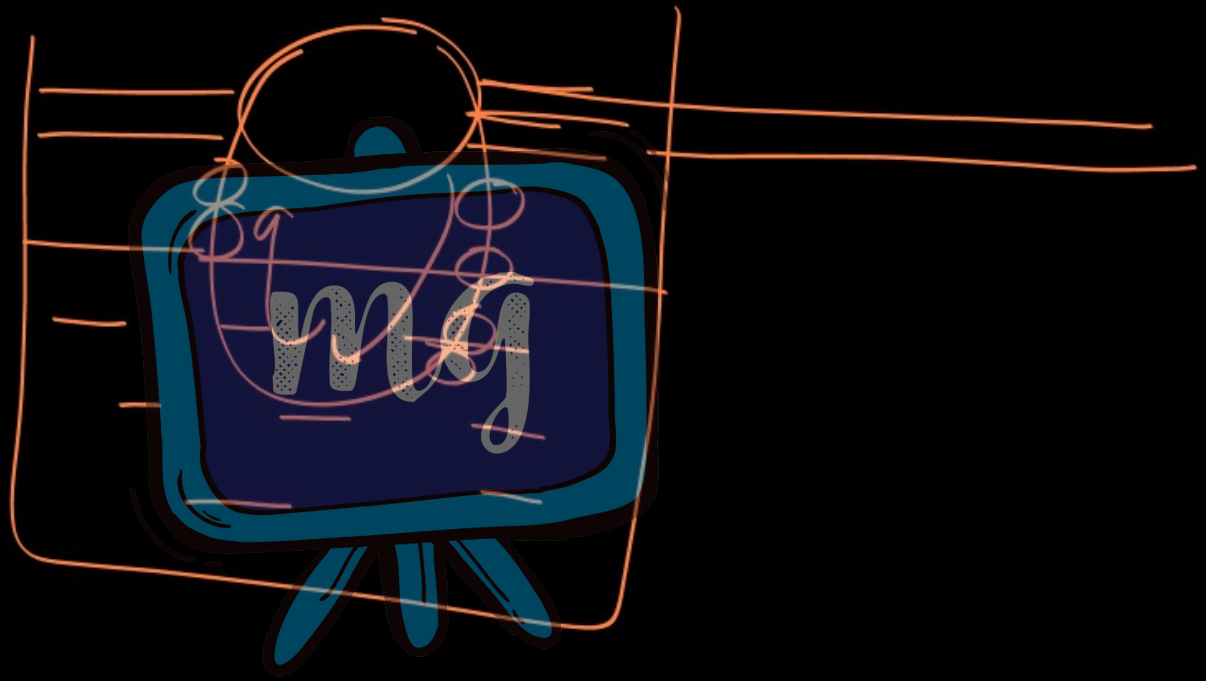
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

आगरा, चाँदवर और बयाना (आज के उत्तर प्रदेश में) में और ऐसे अन्य इलाकों में भी, लोगबाग बालटियों से सिंचाई करते हैं। कुएँ के किनारे पर वे लकड़ी के कन्ने गाड़ देते हैं, इन कन्नों के बीच बेलन टिकाते हैं, एक बड़ी बालटी में रस्सी बाँधते हैं, रस्सी को बेलन पर लपेटते हैं और इसके दूसरे छोर को बैल से बाँध देते हैं। एक शख़्स को बैल हाँकना पड़ता है, दूसरा बालटी से पानी निकालता है।

ipca
A dose of life

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



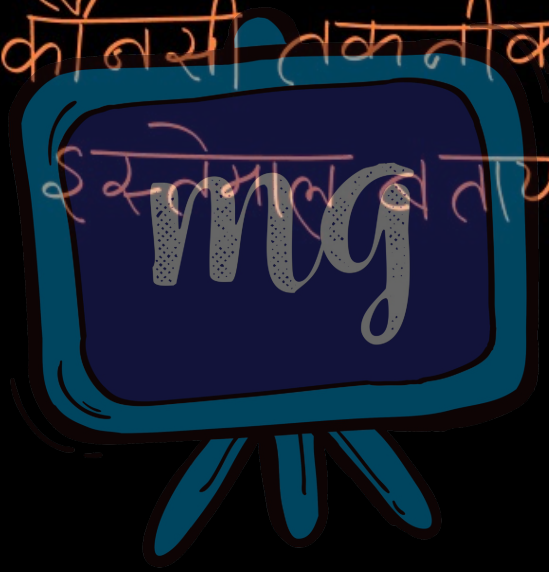

mg

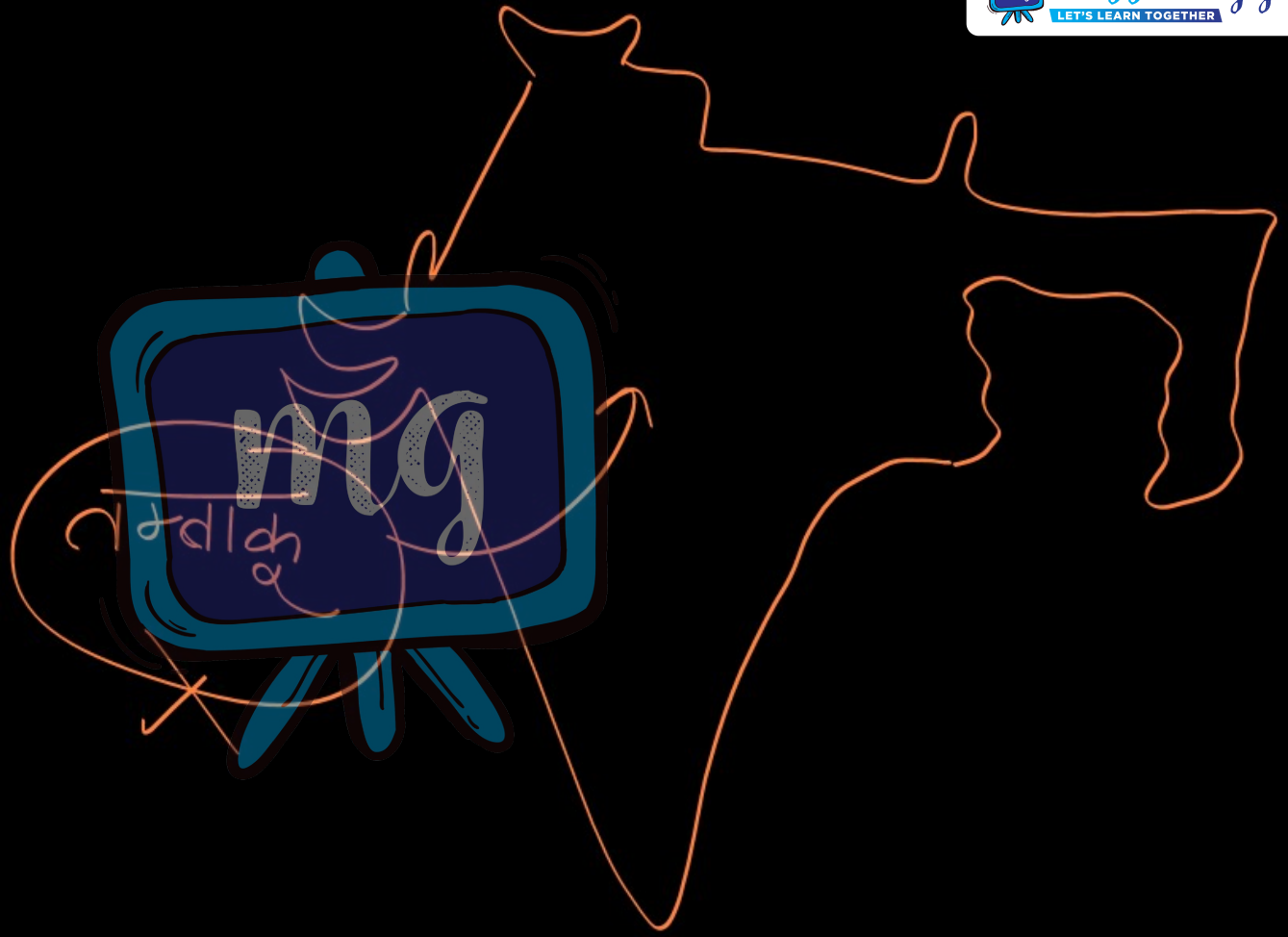


ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. बाबरनामा में सींचाई की कौनसी तकनीक का इस्तेमाल बताया गया है?




mg

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

तम्बाकू का प्रसार

यह पौधा सबसे पहले दक्कन पहुँचा और वहाँ से सत्रहवीं सदी के शुरुआती वर्षों में इसे उत्तर भारत लाया गया।

आइन-ए-अकबरी उत्तर भारत की फ़सलों की सूची में तम्बाकू का ज़िक्र नहीं करती है। अकबर और उसके अभिजातों ने 1604 ई. में पहली बार तम्बाकू देखा। ऐसा लगता है कि इसी समय तम्बाकू का धूम्रपान (हुक्के या चिलम में) करने की लत ने ज़ोर पकड़ा।

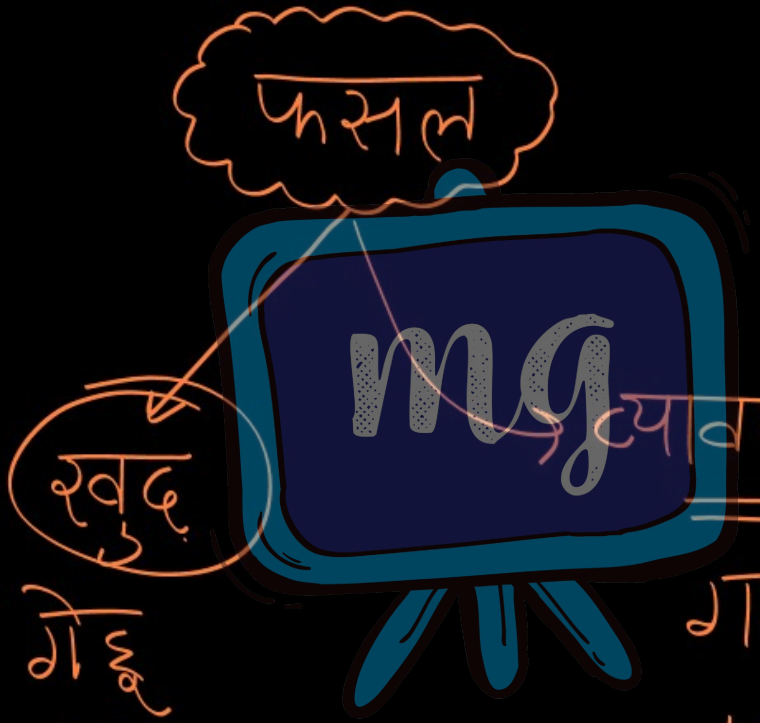
ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

जहाँगीर इस बुरी आदत के फैलने से इतना चिंतित हुआ कि उसने इस पर पाबंदी लगा दी। यह पाबंदी पूरी तरह से बेअसर साबित हुई क्योंकि हम जानते हैं कि सत्रहवीं सदी के अंत तक, तम्बाकू पूरे भारत में खेती, व्यापार और उपयोग की मुख्य वस्तुओं में से एक था

ipca
A dose of life

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



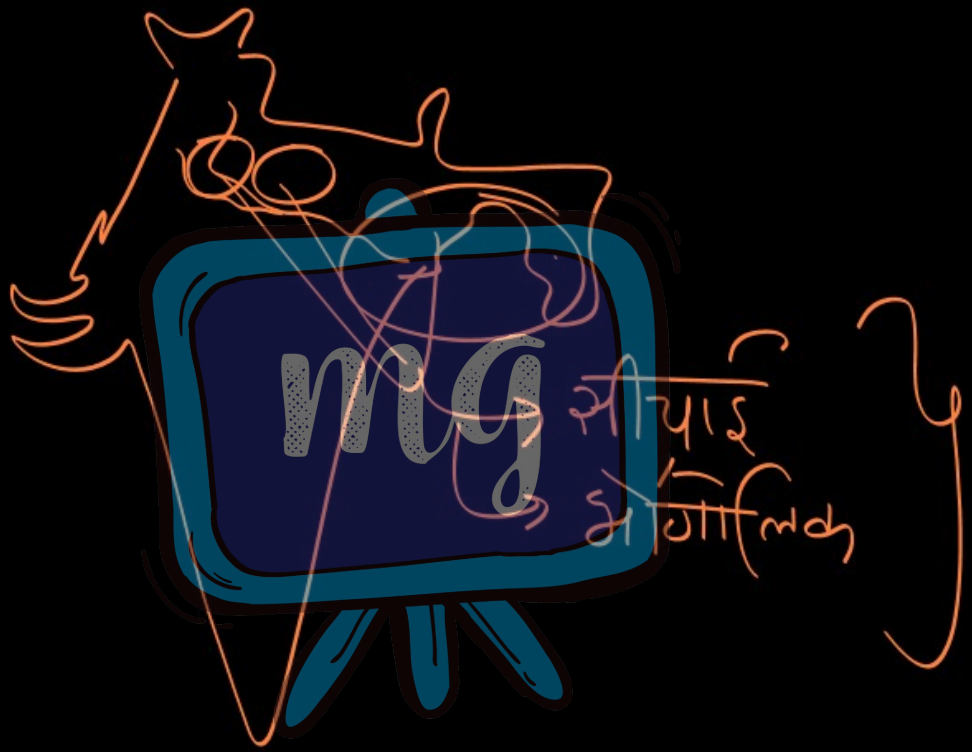
ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

खरीफ़
रबी

फ़सलों की भरमार

- मौसम के दो मुख्य चक्रों के दौरान खेती की जाती थी: एक खरीफ़ (पतझड़ में) और दूसरी रबी (वसंत में)।
- जहाँ बारिश या सिंचाई के अन्य साधन हर वक्त मौजूद थे वहाँ तो साल में तीन फ़सलें भी उगाई जाती थीं। इस वजह से पैदावार में भारी विविधता पाई जाती थी।


mg
मोपाई
औषधालिक

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- आइन हमें बताती है कि दोनों मौसम मिलाकर, मुग़ल प्रांत आगरा में 39 किस्म की फ़सलें उगाई जाती थीं जबकि दिल्ली प्रांत में 43 फ़सलों की पैदावार होती थी। बंगाल में सिर्फ चावल की 50 किस्में पैदा होती थीं।
- दैनिक आहार की खेती पर ज़्यादा ज़ोर दिया जाता था मगर इसका मतलब यह नहीं था कि मध्यकालीन भारत में खेती सिर्फ़ गुज़ारा करने के लिए की जाती थी।

ipca
A dose of life

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- स्रोतों में हमें अकसर जिन्स-ए-कामिल (सर्वोत्तम फ़सलें) जैसे लफ़्ज़ मिलते हैं।
- मुग़ल राज्य भी किसानों को ऐसी फ़सलों की खेती करने के लिए बढ़ावा देता था क्योंकि इनसे राज्य को ज़्यादा कर मिलता था।
- कपास और गन्ने जैसी फ़सलें बेहतरीन जिन्स-ए-कामिल थीं।

Q. जिन्स ए कामिल क्या थी?
इनमें कौन सी फसलें
शामिल थी?



सर्वोत्तम फसल → राजस्व

- गन्ना
- कपास

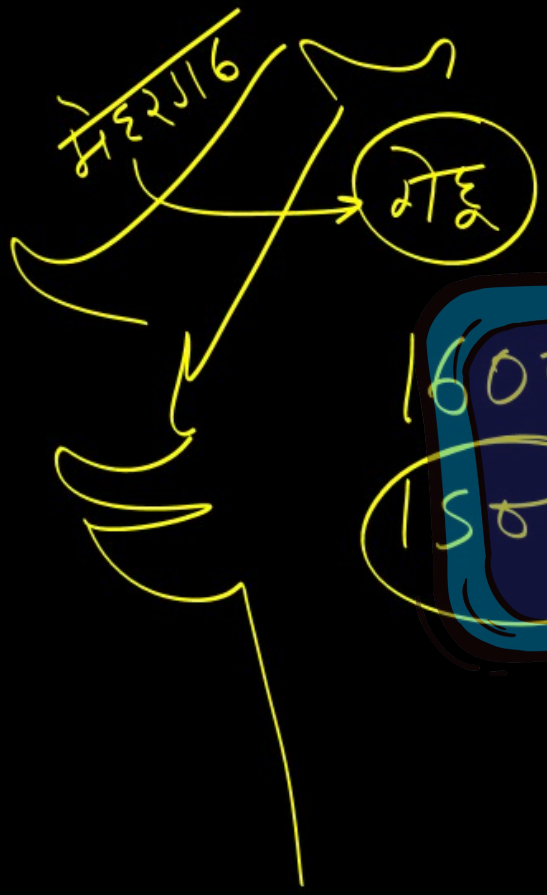
ipca
A dose of life

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- मध्य भारत और दक्कनी पठार में फैले हुए ज़मीन के बड़े-बड़े टुकड़ों पर कपास उगाई जाती थी, जबकि बंगाल अपनी चीनी के लिए मशहूर था। तिलहन (जैसे सरसों) और दलहन भी नकदी फ़सलों में आती थीं।
- सत्रहवीं सदी में दुनिया के अलग-अलग हिस्सों से कई नयी फ़सलें भारतीय उपमहाद्वीप पहुँचीं।

ipca
A dose of life

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

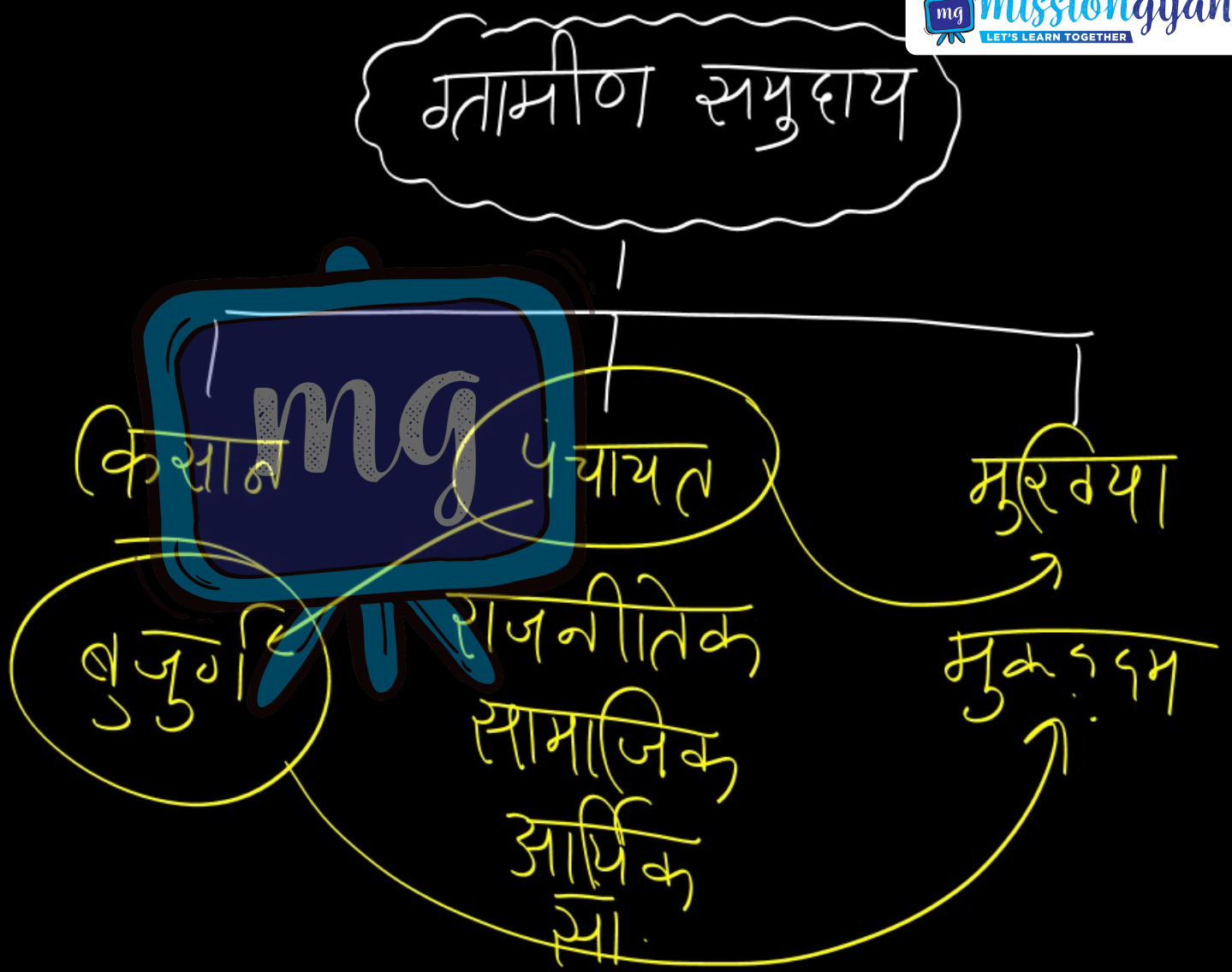


Q. कौन कौन सी फसलें भारत के बाहर से आई?

- मक्का भारत में अफ्रीका और स्पेन के रास्ते आया।
- टमाटर, आलू और मिर्च जैसी सब्ज़ियाँ नयी दुनिया (अमेरिका) से लाई गईं। इसी तरह अनानास और पपीता जैसे फल वहीं से आए।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

ग्रामीण समुदाय

- किसान की अपनी ज़मीन पर व्यक्तिगत मिल्कियत होती थी।
- वे एक सामूहिक ग्रामीण समुदाय का हिस्सा थे। इस समुदाय के तीन घटक थे –
  1. खेतिहर किसान
  2. पंचायत और
  3. गाँव का मुखिया (मुक़द्दम या मंडल)।

जाति और ग्रामीण माहौल

- जाति और अन्य जाति जैसे भेदभावों की वजह से खेतिहर किसान कई तरह के समूहों में बँटे थे।
- खेतों की जुताई करने वालों में एक बड़ी तादाद ऐसे लोगों की थी जो नीच समझे जाने वाले कामों में लगे थे, या फिर खेतों में मज़दूरी करते थे।

ipca
A dose of life

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- हालाँकि खेती लायक ज़मीन की कमी नहीं थी, फिर भी कुछ जाति के लोगों को सिर्फ नीच समझे जाने वाले काम ही दिए जाते थे। इस तरह वे ग़रीब रहने के लिए मजबूर थे।
- गाँव की आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा ऐसे ही समूहों का था। इनके पास संसाधन सबसे कम थे और ये जाति व्यवस्था की पाबंदियों से बँधे थे।

- दूसरे संप्रदायों में भी ऐसे भेदभाव फैलने लगे थे।
- मुसलमान समुदायों में हलालख़ोरान जैसे 'नीच' कामों से जुड़े समूह गाँव की हदों के बाहर ही रह सकते थे।

  इसी तरह बिहार में मल्लाहज़ादाओं (नाविकों के पुत्र), की तुलना दासों से की जा सकती थी।
- समाज के निचले तबकों में जाति, गरीबी और सामाजिक हैसियत के बीच सीधा रिश्ता था।

ipca
A dose of life

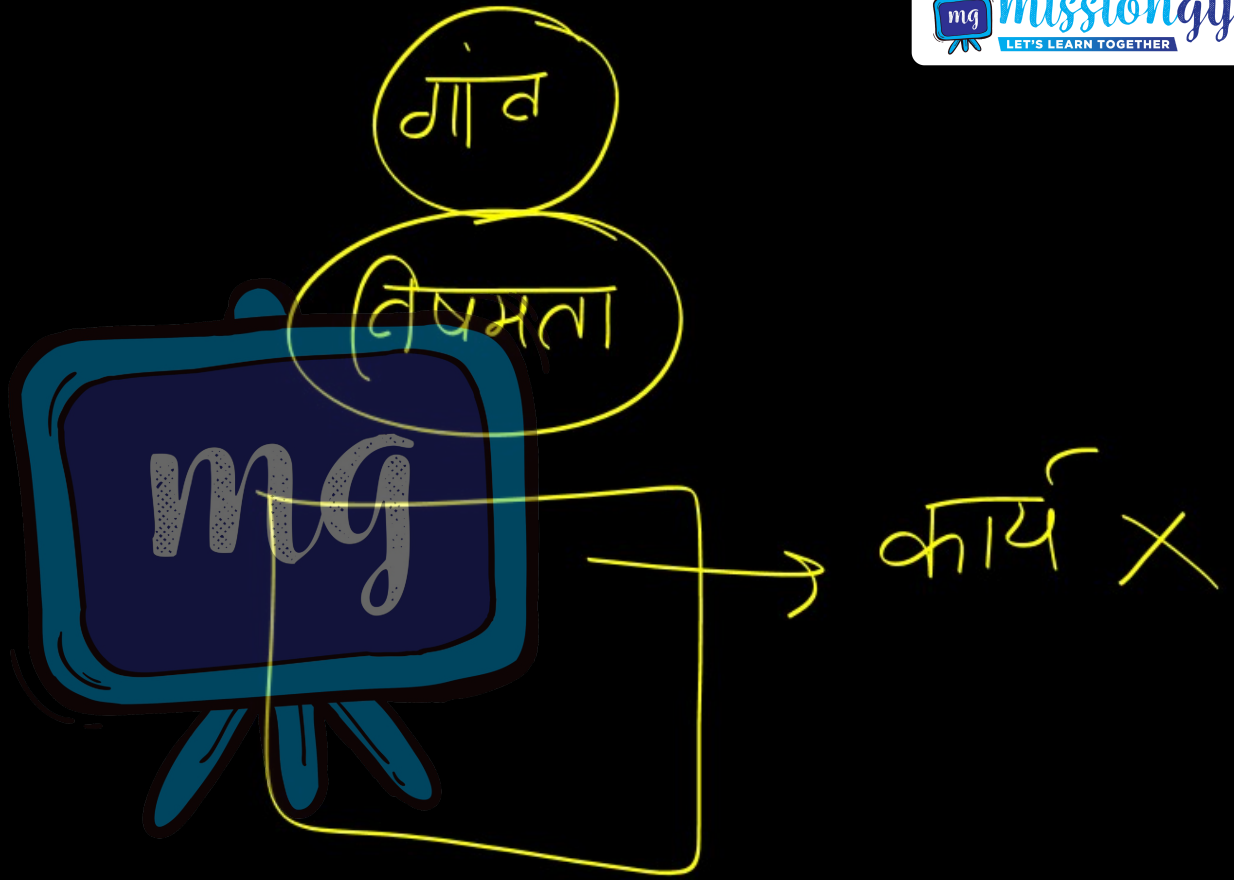
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

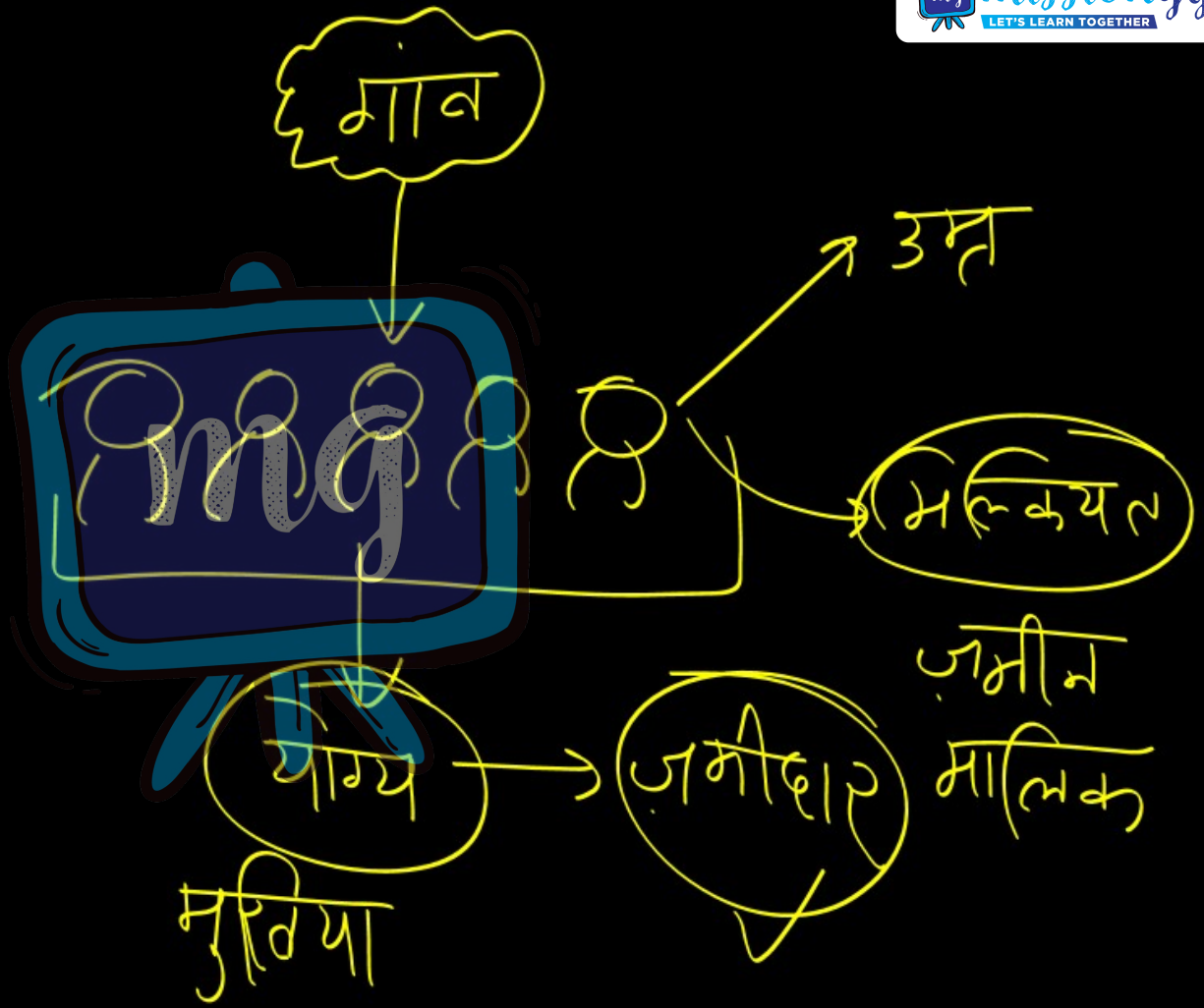
- ऐसा बीच के समूहों में नहीं था। सत्रहवीं सदी में मारवाड़ में लिखी गई एक किताब राजपूतों की चर्चा किसानों के रूप में करती है।
- इस किताब के मुताबिक जाट भी किसान थे लेकिन जाति व्यवस्था में उनकी जगह राजपूतों के मुक़ाबले नीची थी।

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- पशुपालन और बागवानी में बढ़ते मुनाफ़े की वजह से अहीर, गुज्जर और माली जैसी जातियाँ सामाजिक सीढ़ी में ऊपर उठीं।
- पूर्वी इलाकों में, पशुपालक और मछुआरी जातियाँ, जैसे सदगोप व कैवर्त भी किसानों की सी सामाजिक स्थिति पाने लगीं।


गांव
विषमता
mg
कार्य X


मान
mg
उत्
मल्कियत
ज़मीन
मालिक
योग्य
मुखिया
ज़मीदार

ipca
A dose of life

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

